R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-11, अङ्क-10, अक्टूबर 2012

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ०प्र०) का मासिक मुख समाचार पत्र

नवनिर्मित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर, श्री सम्मेदशिखरजी
पञ्च कल्याणक महामहोत्सव (24 नवम्बर से 29 नवम्बर 2012 तक)

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व

विशेषाङ्क 15

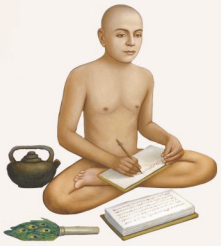

आगम महासागर में से संकलित

वैराग्य-वाणी

1. नवनिधि, चौदहरत्न, घोड़े, मत्त उन्मत्त हाथी, चतुरंगिणी सेना आदि सामग्रियाँ भी चक्रवर्ती को शरणरूप नहीं हैं। उसका अपार वैभव उसे मृत्यु से नहीं बचा सकता।

जन्म, जरा, मरण, रोग और भय से अपना आत्मा ही अपनी रक्षा करता है। कर्म का बन्ध, उदय और सत्ता से भिन्न अपना आत्मा ही इस संसार में शरणरूप है। कर्मों का क्षय करके जन्म-जरा-मरणादि के दु:खों से अपना आत्मा ही अपने को बचाता है।

(श्री कुन्दकुन्दाचार्य, बारह भावना)

2. एक जीव दूसरे किसी जीव के विषय में शोक करता हुआ कहता है कि अरेरे !मेरे नाथ का मरण हुआ... परन्तु वह अपने लिये शोक नहीं करता कि मैं स्वयं संसार-समुद्र में डूबा हुआ हूँ। संसार में जीव जिस प्रकार दूसरों के विषय में विचार करता है उसी प्रकार यदि अपने लिये भी करे तो शीघ्र अपना हित हो जाय, परन्तु जीव अपने विषय में सम्भवत: विचार नहीं करता। *(कुन्दकुन्दाचार्य, मूलाचार)*

3. हे जीव! मैं अकिंचन हूँ, अर्थात् मेरा कुछ भी नहीं है - ऐसी सम्यक् भावनापूर्वक तू निरन्तर रह क्योंकि इसी भावना के सतत चिन्तवन से तू त्रैलोक्य का स्वामी होगा। यह बात मात्र योगीश्वर ही जानते हैं। उन योगीश्वरों को गम्य ऐसे परमात्मतत्त्व का रहस्य मैंने तुझसे संक्षेप में कहा। *(श्री आत्मानुशासन)*

4. संसार में लोग अपने किसी सम्बन्धी मनुष्य की मृत्यु होने पर उसे पुकार कर रुदन करते हैं तथा उसका जन्म होने पर जो हर्ष मनाते हैं, उसे उन्नत्त बुद्धि के धारक गणधर आदि पागलपन कहते हैं; क्योंकि अज्ञानवश जो मिथ्या प्रवृत्तियाँ की गयी हों उनसे होनेवाले कर्म के प्रकृष्ट बन्ध और उसके उदय से सदा यह सारा विश्व मृत्यु और उत्पत्ति की परम्परा स्वरूप है। *(श्री पद्मनन्दिपंचविंशति)*

5. यह जगत इन्द्रजाल तथा कदली-स्तम्भ के समान केवल नि:सार है, यह क्या तू नहीं जानता ? नहीं सुना ? अथवा प्रत्यक्ष नहीं दिखता ? हे जीव! आप्तजनों की मृत्यु के पीछे शोक करना, वह निर्जन वन में टेर लगाने समान व्यर्थ है। जो उत्पन्न हुआ है, वह मरेगा ही। मृत्यु के समय उसे कौन बचा सके ऐसा है ? तथापि मूर्ख मनुष्य, सम्बन्धीजनों की मृत्यु के पीछे शोक करते हैं, यही अनादिकालीन मोह का पागलपन है।

(श्री आत्मानुशासन)

बहिनश्री के आत्म-साधनाप्रेरक पत्र

वि.सं. 1987-88 (ई. स. 1931-32)

.....!

आत्मा आनन्दमय है, ज्ञानपिण्ड है, सहजानन्दी है, किन्तु उसको पाने के लिए अनादि काल से सच्चा प्रयत्न नहीं किया है। इस भव में नहीं करेगा तो, किस भव में करने का सोचा है ?

जड़ एवं चैतन्य दोनों के स्वभाव प्रतिपक्ष हैं। रूपी ऐसे जड़ अर्थात् मूर्त-पुद्गल, वर्ण, गंध, रस और स्पर्शसहित हैं और आत्मा उससे रहित है, अरूपी है, किन्तु जीव को यह सब भाषा में बोलनेमात्र है, उसे अपने स्वरूप का प्रेम कहाँ आता है ? प्रेम लाए बिना मोक्ष नहीं मिलेगा। पुरुषार्थ किए बिना, परिश्रम किए बिना, अनन्त सुख तीन काल में नहीं मिल सकता।

बस यह ही....

विशेष लिखने से क्या मिले ? अन्तःकरण में परिणमन किए बिना, संसार के प्रति उदासीनता लाए बिना, वैराग्यबल बढ़ाए बिना, उपशमबल बढ़ाए बिना, अपने अनन्त सुख का मार्ग हमें नहीं मिलेगा। जीव करता कुछ नहीं और थोड़े में अधिक समझ कर बैठ जाता है। हमें यदि स्वरूप की चाहना हो, परिभ्रमण से थके हों तो, धीरे-धीरे (शनैः शनैः) मार्ग में चले बिना, पुरुषार्थ किए बिना, बातें करने से या पत्र लिखने से स्वस्वरूप नहीं मिलेगा, किन्तु जीव अभी परिभ्रमण से थका ही कहाँ है ? अपने पर प्रेम ही कहाँ है ? - अन्यथा बिना पुरुषार्थ किए चैन से बैठ नहीं सकता।

आप तो पुरुषार्थ करते होंगे। मैं मुझे प्रमादी लगती हूँ। कुछ नवीन या विशेष नहीं हो रहा है - ऐसा लगता है; बस इतना ही; वैराग्यबल बढ़ाना। मुझे व आपको यह ही कर्त्तव्य है।

लि.

बहिन चम्पा के वन्दन

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2012-14

तीर्थधाम मङ्गलायतन का दसवाँ वार्षिक महोत्सव

मङ्गलायतन अमृत महोत्सव

दिनांक 31 जनवरी से 06 फरवरी 2013

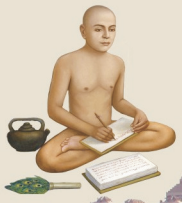

आत्मार्थी बन्धुवर,

सादर जयजिनेन्द्र!

वीतरागी जिनशासन की गौरवमयी परम्परा में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं तत्पथानुगामी बहिनश्री चम्पाबेन सहित समस्त धर्मात्माओं के प्रभावनायोग में निर्मित आपका अपना **तीर्थधाम मङ्गलायतन** अपनी स्थापना के दस वर्ष पूर्ण कर रहा है।

इस माङ्गलिक उपलक्ष्य में दिनांक **31 जनवरी से 06 फरवरी 2013** तक **मङ्गलायतन अमृत महोत्सव** के रूप में विशाल धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भक्तिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस पावन प्रसंग पर देश के ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ताओं के द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित जिनशासन के सनातन सत्य सिद्धान्तों को समझकर आत्मसात करने का यह अवसर अभी से अपने जीवन में निश्चित करने हेतु हमारा हार्दिक आमन्त्रण है। कृपया अवश्य पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित करें।

निवेदक

श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द-कहान-दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़

कुन्दकुन्द-प्रवचन-प्रसारण संस्थान, उज्जैन

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़ - 202 001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan
Digamber Jain Trust
Harinagar, Agra Road, Aligarh-202 001

Ph. : 9997996346, 2410010/11; Fax : 2410019/22
info@mangalayatan.com; www.mangalayatan.com